6. कठोपनिषद् के अनुसार आत्मतत्व के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

7. अद्वैत वेदान्त के अनुसार माया सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

8. पुरुष सूक्त के अनुसार परम तत्व से सृष्टि के उद्भव की विवेचना कीजिए।

9. न्याय दर्शन में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

SA–06

June – Examination 2022

B.A. (Part–III) Examination

SANSKRIT

वेद, उपनिषद् तथा भारतीय दर्शन

Paper : SA-06

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×3½=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3½ अंक का है।

1. (i) पृथ्वीस्थानीय देवताओं के नाम लिखिए।

   (ii) काल सूक्त के ऋषि का क्या नाम है ?

(iii) संज्ञान सूक्त किस मण्डल का कौनसा सूक्त है ?

(iv) 'यस्येदं राधः इन्द्र' सूक्त के अनुसार रेखांकित पद का क्या अर्थ है ?

(v) 'शक्तस्य शक्यकरणात्' वाक्य किस सिद्धान्त से सम्बद्ध है ?

(vi) कठोपनिषद् के अनुसार रथ के रूपक में इन्द्रियों को क्या कहा गया है ?

(vii) कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता ने द्वितीय वर के रूप में क्या माँगा ?

(viii) देहात्मवाद सिद्धान्त किस दर्शन से सम्बद्ध है ?

खण्ड—ब **4×14=56**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए—

(अ) येन कर्माण्यपसो मनीषिणो
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

अथवा

(ब) अभि त्वां देवः सविता-भि सोमो अवीवृधत्।
अभि त्वा विश्वा भूता-स्यभीवर्तो यथाससि॥

3. बौद्ध दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र की व्याख्या संस्कृत भाषा में कीजिए—

(अ) श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते॥

अथवा

(ब) श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोऽपि बहवो यन्न विद्युः।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥

5. यजुर्वेदीय धर्म की समीक्षा कीजिए।